MPAT- Phase – II (2018)
University of Rajasthan, Jaipur
Subject : Sanskrit (Code : 144)

पाठ्यक्रम

भाग अ
इकाई (i)

(अ) संस्कृत साहित्य एवं इतिहास

वैदिक साहित्य का इतिहास– संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदांग– शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष।

ललित साहित्य का इतिहास– महाकाव्यकाल, महाकाव्यों का उद्भव एवं विकास, नाटकों का उद्भव एवं विकास, गीति काव्य का उद्भव एवं विकास, गद्य काव्य का उद्भव एवं विकास।

(ब) वैदिक सूक्त एवं निरुक्त :

ऋग्वेद– अग्नि 1.1, इन्द्र 2.12, पुरुष 10.90, हिरण्यगर्भ 10.12, नासदीय 10.129, वाक् 10.125
संवाद एवं आख्यान– पुरुरवा– उर्वशी,यम– यमी, सरमा– पणी, विश्वामित्र– नदी, आख्यान– शुनःशेप, वाड् मनस,
अथर्ववेद– पृथ्वीसूक्त 12.1

निरुक्त (अध्याय 1 एवं 2)
चार पद– नाम का विचार, आख्यात का विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपातों की कोटियां, क्रिया के छः रूप (षड्भाव विकार),, निरुक्त के अध्ययन के उद्देश्य, निर्वचन के सिद्धान्त,
निम्नलिखित शब्दों के निर्वचन– आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र आदित्य, उषस्, मेघ, वाक्, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु।

(स) पुराण एवं स्मृतियाँ
पुराण– पुराण की परिभाषा, महापुराण एवं उपपुराण, पौराणिक सृष्टिविज्ञान, पौराणिक एवं लौकिककलाएं, पौराणिक आख्यान।
स्मृतियां– कौटिल्य अर्थशास्त्र(प्रथम अधिकरण), मनुस्मृति (प्रथम, द्वितीय तथा सप्तम अध्याय)।

इकाई (II)

(अ) छन्द एवं अलंकारः

छन्द– अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, भुजंगप्रयात,वसन्ततिलका, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, हरिणी, शार्दूलविक्रीड़ित, स्रग्धरा,आर्या, पुष्पिताग्रा, वियोगिनी, पथ्यावक्त्र, रुचिरा एवं शालिनी।

अलंकार– अनुप्रास, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपह्नुति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त,विभावना, विशेषोक्ति, संकर, संसृष्टि।

नाट्य एवं नाट्यशास्त्र

नाट्य– अभिज्ञानशाकुन्तलम, उत्तररामचरित।

नाट्यशास्त्र– भरत नाट्यशास्त्र(प्रथम, द्वितीय तथा षष्ठ अध्याय),

काव्यशास्त्रः–साहित्यदर्पणः– काव्य की परिभाषा एवं अन्य काव्यपरिभाषाओं का खण्डन,
शब्दशक्ति, संकेतग्रह, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना,
रस (रसभेद स्थायी भावों सहित),
रूपक के प्रकार, नाटक के लक्षण,
महाकाव्य के लक्षण।

(ब) धर्मशास्त्र

धर्मसिन्धु (प्रथम परिच्छेद)

याज्ञवल्क्यस्मृति व्यवहारध्याय दायभाग प्रकरण पर्यन्त।

(स) भारतीय दर्शन

ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका– सत्कार्यवाद, पुरुष स्वरूप, प्रकृतिस्वरूप, सृष्टिक्रम, प्रत्ययसर्ग, कैवल्य।

सदानन्द का वेदान्तसार– अनुबन्ध चतुष्टय, अज्ञान, अध्यारोप–अपवाद, लिंगशरीरोत्पत्ति, पंचीकरण, विवर्त, जीवनमुक्ति।

केशवमिश्र की तर्कभाषा– पदार्थ, कारण, प्रमाण– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द।

योगसूत्र (प्रथम पाद)

ईकाई (III)

महाभाष्य एवं भाषाविज्ञानः

(अ) महाभाष्य (प्रस्पशाह्निक) –शब्द की परिभाषा, शब्द एवं अर्थ सम्बन्ध, व्याकरण के अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम, व्याकरण की पद्धति।

(ब) भाषाविज्ञान– भाषा की परिभाषा, भाषाओं का वर्गीकरण(आकृतिमूलक एवं पारिवारिक), ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि नियम (ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर), अर्थपरिवर्तन की दिशाएं तथा कारण, वाक्य का लक्षण तथा भेद, भारोपीय भाषा परिवार का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय, भाषा तथा वाक् में अन्तर, भाषा और बोली में अन्तर।

(स) संज्ञा, सन्धि एवं समास (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

संज्ञा– परिभाषाएँ– संहिता, गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी, घि, उपधा, अपृक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनामस्थान, निष्ठा।

सन्धि–

(I) **स्वरसन्धि**–इको यणचि, एचोऽयवायावः, आद्गुणः, लोपः शाकल्यस्य, वृद्धिरेचि, एङि पररूपम्, शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्, अकः सवर्णे दीर्घः,एङः पदान्तादति, ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्।

(II) **व्यंजन सन्धि**–स्तोः श्चुना श्चुः, ष्टुना ष्टुः,झलां जशोऽन्ते, यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा, तोर्लिः, झयोहोऽन्यतरस्याम्, शश्छोऽटि, मोऽनुस्वारः, अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः, ङ.मो ह्रस्वादचि ङ.मण् नित्यम्, छे च।

(III) **विसर्गसन्धि**– विसर्जनीयस्य सः, स सजुषो रुः, अतो रोरप्लुतादप्लुते, हशि च, भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि, रो रि, ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः, एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनऽसमासे हलि।

समास– सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार

अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, बहुव्रीहि, समासों का संस्कृत में विग्रह करना तथा समस्त पद बनाना।

कारक सिद्धान्त एवं प्रयोग सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार।

31/12/18

31/12/18